315hi05

5

जनपद से साम्राज्य की ओर

पिछले अध्याय में हमने पढ़ा कि उत्तर वैदिक काल के लोगों ने गंगा की घाटी में खेती करना शुरू किया और स्थायी रूप से गाँवों में बस गए। इस पाठ में हम सीखेंगे कि बढ़ते हुए कषि कार्यकलापों और स्थायी जीवन के परिणामस्वरूप छठी सदी ई.पू. काल में भारत के उत्तर में सोलह महाजनपदों (विशाल प्रादेशिक राज्य) का विकास हुआ। हम उन तत्वों पर भी विचार करेंगे, जिनके कारण इन प्रदेशों में से एक राज्य मगध बाद में मौर्यों के शासन के अधीन एक विशाल साम्राज्य के स्तर तक पहुंचा। मौर्य काल को आर्थिक और सांस्कतिक प्रगति के क्षेत्र में महान उन्नति का काल माना जाता है। परन्तु अशोक की मत्यु के पचास वर्षों के भीतर ही समाप्त (इसका पतन) हो गया था। हम इस पतन के कारणों का भी विश्लेषण करेंगे। इस काल में (छठी शताब्दी ई.पू.) कई नए धर्मों, जैसे बौद्ध धर्म और जैन धर्म का उद्भव भी हुआ। कई नए धर्मों के जन्म लेने के विभिन्न कारणों और उनके मुख्य सिद्धांतों के बारे में भी बताया जाएगा।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् आप :

- छठीशताब्दी ई.पू. काल में, उन भौतिक और सामाजिक कारणों (जैसे कषि और नए सामाजिक वर्गों का विकास) की व्याख्या कर सकेंगे, जो महाजनपदों और नए धर्मों के उद्भव का आधार बने थे;
- बौद्ध धर्म और जैन धर्म के सिद्धांतों, संरक्षण, विस्तार और प्रभाव का विश्लेषण कर सकेंगे;
- भारतीय राज्यशाही में छोटे प्रदेशों से बड़े साम्राज्यों के विकास की जड़ें खोज सकेंगे और सोलह महाजनपदों की सूची बना सकेंगे;
- धम्म की नीति के ज़रिये साम्राज्यों को संगठित करने के लिए अशोक की भूमिका की परख कर सकेंगे;
- मौर्यशासन काल में प्रशासन, अर्थव्यवस्था, समाज की मुख्य विशेषताओं को रेखांकित कर सकेंगे, और
- मौर्य साम्राज्य के पतन के कारणों को जान सकेंगे।

5.1 नए धर्मों का उद्‌भव

इस काल में आर्थिक और राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश से पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में स्थानांतरित हो गया था, जहाँ पर ज्यादा वर्षा होती थी और अधिक उपजाऊ भूमि थी। क्योंकि इस समय तक बिहार में उपलब्ध लौह अयस्क के संसाधनों से लाभ उठाना आसान हो गया था और लोगों ने घने जंगलों की कटाई और इस क्षेत्र की कठोर मिट्‌टी को खोदने के लिए औज़ार और हल की फाल इत्यादि का प्रयोग शुरू कर दिया था।

इस काल के पुरातात्त्विक साक्ष्यों और साहित्यिक स्रोतों से ये प्रमाण मिले हैं कि कषि की पैदावार में वद्धि हुई थी। वास्तव में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एटा जिले में जखेड़ा नामक स्थान पर, 500 ई. पू. के आसपास एक हल की फाल मिली है। इस काम में लोहे का प्रयोग किए जाने के अनेक साक्ष्य राजघाट, कौशाम्बी, वैशाली और सोनपुर से भी मिले हैं। बौद्ध धर्म के ग्रंथों से हमें पता चलता है कि धान, गन्ना और सरसों की खेती के लिए कितनी सावधानी की जरूरत होती है और इसमें अनेक बार जुताई करनी पड़ती है। खेती–बाड़ी के विस्तार के फलस्वरूप खाद्यों की आपूर्ति में सुधार हुआ और शिल्पकारी के उत्पादों, व्यापार और शहरी केन्द्रों के विकास में भी सहायता मिली।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व काल को भारतीय उप–महाद्वीप में 'द्वितीयृशहरीकरण' के चरण के रूप में जाना जाता है। हड़प्पाकालीन नागरिक केंद्रों के पतन के बाद एक हज़ार वर्षों के अन्तराल के बाद अब पुनः शहरों का विकास हुआ था। परन्तु इस बार शहरों का विकास मध्य गंगा की घाटी के क्षेत्र में हुआ, न कि सिंधु नदी के मैदानों में। कहा जाता है कि 600 और 300 ईसा पूर्व काल में पाटलिपुत्र, राजगढ़िया, श्रावस्ती, वाराणसी, वैशाली, चम्पा, कौशाम्बी और उज्जयिनी जैसे साठ शहरों का विकास हुआ था।

ये नगर शिल्पकला उत्पादों और व्यापार के केंद्र बन गए और यहाँ बहुत बड़ी संख्या में कारीगरों और व्यापारियों का निवास होने लगा था। कारीगरों द्वारा बनाई गई वस्तुएँ, जैसे कपड़े, रेशम, गहने, मिट्‌टी के बर्तन इत्यादि को यहाँ के व्यापारी अन्य शहरों में ले जाते थे। श्रावस्ती और कौशाम्बी से जुड़ा शहर वाराणसी व्यापार का मुख्य केंद्र था। श्रावस्ती भी कपिलवस्तु और कुशीनारा के ज़रिये आपस में जुड़े थे। जातक कथाओं से पता चलता है कि व्यापारी मथुरा और तक्षशिला के रास्ते मगध और कौशल से व्यापार के लिए जाते थे। उज्जैन और गुजरात के समुद्रतटीय क्षेत्रों की यात्रा के लिए मथुरा पारगमन का मुख्य केंद्र था।

साँचों में ढलाई करके बनाए गए हजारों मुद्रांकित सिक्कों (पंच मार्क्ड) सिक्के (पी.एम.सी) की खोज से विकसित व्यापार की झलक मिलती है। विभिन्न प्रकार के चिह्न, जैसे अर्धचन्द्राकार, मछली, पेड़, पहाड़ी इत्यादि के चिह्न इन सिक्कों पर पाए गए हैं, इसीलिए इन सिक्कों को पंच मार्क्ड सिक्के (सांचे की ढलाई में बने सिक्के कहते है।) मुद्राशास्त्रियों ने ऐसे लगभग 500 सिक्कों की पहचान की है, जो कि मुख्यतः चांदी और कहीं–कहीं तांबे से बने हैं। कषि में सुधार और व्यापारिक, आर्थिक और शहरीकरण के विकास का प्रभाव समाज पर भी पड़ा। बेशक, इन परिवर्तनों के कारण पारम्परिक समानता और भाईचारे में असमानता और सामाजिक संघर्ष होने लगे। हिंसा, अत्याचार, चोरी, नफरत और झूठ जैसी सामाजिक बुराइयों से लोग किसी प्रकार छुटकारा चाहते थे। इसलिए बौद्ध और जैन धर्मों ने जब शांति और सामाजिक समानता का प्रचार किया तो लोगों ने

इसका स्वागत किया। इन धर्मों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि वास्तविक प्रसन्नता (सुख) किसी भौतिक समद्धि अथवा धार्मिक अनुष्ठान में नहीं है, बल्कि दान, मितव्ययिता, अहिंसा और अच्छे सामाजिक व्यवहार में है। उसके अतिरिक्त सामान्य आर्थिक प्रगति के कारण वैश्यों और अन्य व्यापारिक समूहों का उदय हो गया था, जो अब अपने लिए उस सामाजिक स्तर से बेहतर स्थान पाने की इच्छा रखते थे, जो ब्राह्मणों ने उनके लिए निध ार्रित किया था। इसलिए उन्होंने बौद्ध और जैन धर्म जैसे गैर–वैदिक धर्मों को संरक्षण दिया और उन्हें अत्यधिक दान दिया। केवल बौद्ध धर्म और जैन धर्म ने ही ब्राह्मणों के वर्चस्व को चुनौती नहीं दी थी। बौद्ध धर्म के विविध स्रोतों से पता चलता है कि इस काल में 62 पंथों और दार्शनिक विचारधाराओं से भी अधिक विचारधाराएँ प्रचलित थीं। इनमें से एक का नाम था 'आजीविका', जिसकी नींव मक्खाली घोषाल ने रखी थी। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व काल में आजीविकाएँ मगध में बहुत प्रचलित थीं और मौर्य शासकों ने 'आजीविका' के भिक्षुओं को अनेक गुफाएँ दान में दी थीं।

पाठगत प्रश्न 5.1

1. छठी शताब्दी ई.पू. के दौरान जिन स्थानों पर लोहे के औज़ारों के साक्ष्य मिले थे, उनके नाम लिखें।

2. इस काल के कुछ महत्त्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों और व्यापार केंद्रों का विवरण दें।

3. प्राचीन सिक्कों को पंच मार्क्ड सिक्के (सांचे में ढले चिह्नित सिक्के) क्यों कहते थे?

4. आजीविका पंथ की नींव किसने रखी?

5.2 जैन धर्म और बौद्ध धर्म के सिद्धांत

जैन धर्म

वर्द्धमान महावीर को जैन धर्म का संस्थापक माना जाता है। उनका जन्म 599 ईसा पूर्व बिहार में वैशाली के निकट हुआ था। वे जैन धर्म के चौबीसवें और अंतिम 'तीर्थंकर' थे। जैन धर्म की आस्था थी कि मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य है आत्मा की शुद्धि और निर्वाण प्राप्त करना, जिसका अर्थ है जन्म–मरण के आवागमन से मुक्ति। उनका कहना था कि इसे धार्मिक अनुष्ठानों और पशु–बलियों से प्राप्त नहीं किया जा सकता, बल्कि इसकी प्राप्ति 'त्रिरत्न' और 'पंचमहाव्रत' से होगी। 'त्रिरत्न' अथवा तीन स्वर्ण सिद्धांत हैं– उचित विश्वास, उचित ज्ञान और उचित व्यवहार जिन पर चलकर ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। उचित व्यवहार का अभिप्राय है पांच नियमों पर चलने की शपथ लेना; 'अहिंसा' (किसी प्रकार की हिंसा न करें), 'सत्य वचन' (झूठ मत बोले), 'आस्तेय' (चोरी न करें), 'ब्रह्मचर्य' (भोग–विलास में लिप्त न हों), और 'अपरिग्रह' (संपत्ति का अधिग्रहण

न करें)। जैन मुनियों की तुलना में गहस्थ लोगों से इन 'अणुव्रत' (छोटे संकल्प) कहे जाने वाले सदगुणों के कठोर अनुपालन की आशा नहीं की जाती थी। अतः हम यह देख सकते हैं कि ब्राह्मण–धर्म धार्मिक–कर्मकांड पर बल देता था तो यह नया धर्म व्यवहार–आधारित था। जैन धर्म की सबसे प्रमुख विशेषता थी 'अनेकनतवदा' या कहें 'स्यादवदा'। इसका अर्थ है कि सत्य को अनेक अथवा विविध कोणों से परखा जा सकता है। जैन धर्म की एक और प्रमुख विशेषता थी कठोर प्रायश्चित, आडम्बरहीनता और कठोर अहिंसा धर्म का पालन। शायद कठोर अनुशासन के सिद्धांतों पर बल देने के कारण ही बहुत बड़ी संख्या में अनुयायी इस धर्म की ओर आकर्षित नहीं हो पाए। महावीर ने अपने सिद्धांतों (संदेशों) के प्रचार के लिए प्राकत भाषा का प्रयोग किया। तथापि अन्य धर्मों की तरह, जैन धर्म भी बहुत लंबी अवधि तक संगठित नहीं रह सका और 'दिगम्बर' (जो निर्वस्त्र रहते थे) और 'श्वेताम्बर' (जो सफेद वस्त्र पहनते थे) नामक दो वर्गों में बँट गया।

बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म के संस्थापक थे गौतम बुद्ध, जिनका जन्म कि 566 ईसा पूर्व नेपाल की पहाड़ी तराई में स्थित लुम्बिनी में हुआ। एक रात उन्होंने सत्य की खोज में अपने महल का त्याग कर दिया और अन्त में बोधगया में सत्य का ज्ञान प्राप्त किया। उसके बाद उन्हें 'बुद्ध' या 'प्रबुद्ध' कहा जाने लगा। उन्होंने अपना पहला प्रवचन वाराणसी के पास सारनाथ में दिया। इस घटना को धर्म–चक्र–प्रवर्तन (विधि के चक्र का परिवर्तन) का नाम दिया गया। यहाँ पे उन्होंने अपने 'संघ' की भी स्थापना की। उनकी मत्यु 80 वर्ष की आयु में पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के पास कुशीनारा या कुशीनगर में 486 ईसा पूर्व में हुई थी।

बुद्ध ने अपने अनुयायियों को दो अतियों से बचने के लिए कहा– न तो सांसारिक सुखों में लिप्त हों और न ही कठोर ब्रह्मचर्य और सन्यासी बनो। 'मध्यम मार्ग' या 'मध्यम रास्ता' अपनाने के इस दर्शन की झलक बौद्ध धर्म से संबद्ध सभी विषयों में मिलती थी। बौद्ध धर्म के प्रमुख सिद्धान्तों की संरचना का मूल आधार था। चार महान सत्य या 'आर्य सत्य' और 'अष्टांग मार्ग' या 'अष्टांगिका मार्ग'। प्रथम महान सत्य जिसकी शिक्षा बुद्ध ने दी वह था, यह संसार कष्टों (दुख) से भरा है और पीड़ाओं का महासागर है। दूसरा महान सत्य है 'दुख समुदय' अर्थात् प्रत्येक कष्ट का कोई न कोई कारण होता है। तीसरा महान सत्य है 'दुख निरोध' अर्थात दुख का निवारण किया जा सकता है और चौथा सत्य है 'दुख विरोध गामिनी प्रतिपदा' यानी दुख के निवारण का रास्ता है। यदि व्यक्ति दुखों से छुटकारा पाना चाहता है तो उसे अपनी इच्छाओं पर विजय प्राप्त करनी होगी। इच्छाओं से बचने के लिए उन्होंने अष्टांग मार्ग पर चलने की शिक्षा दी, ये मार्ग थे : उचित विश्वास, उचित विचार, उचित भाषा, उचित काम, उचित आजीविका, उचित प्रयास, उचित सोच, और उचित ध्यान।

बुद्ध ने अपनी शिक्षाओं के प्रचार के लिए सामान्य जनमानस द्वारा बोली जाने वाली भाषा 'पालि' का प्रयोग किया। बुद्ध ने निम्न वर्ण के लोगों और महिलाओं को भी 'संघ' में प्रवेश की अनुमति दी। विविध कालावधियों में आयोजित किए गए चार बौद्ध सम्मेलनों ने बौद्ध धर्म के प्रसार में बहुत बड़ी भूमिका निभाई। कनिष्क साम्राज्य के दौरान आयोजित चौथे सम्मेलन में बौद्ध धर्म दो बड़ीशाखाओं में बंट गया– जिन्हें हीनयान और महायान कहते थे। महायान ने संस्कत भाषा को अपनाया और बुद्ध की मूर्तिपूजा करनी शुरू कर दी, जबकि हीनयान अभी भी पालि भाषा में प्रचार करते है और बुद्ध को अपना मार्गदर्शक मानते है।

सातवींशताब्दी ईसा पश्चात बौद्ध धर्म कमज़ोर पड़ता गया परन्तु भारतीय इतिहास में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बौद्ध धर्म के प्रभाव को देखा जा सकता है। बौद्ध विद्वानों ने अनेक साहित्यिक ग्रन्थों की रचना की जैसे –'त्रिपिटिका,' 'मिलिन्दपानहो,' 'बुद्धचरित' इत्यादि। स्तूपों, चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं और चित्रकारी के रूप में बौद्ध धर्म, कला और वास्तुशिल्प की प्रगति के लिए प्रेरणा बना। सांची, भड़ौत, अमरावती, अजन्ता इत्यादि स्थानों पर इसे देखा जा सकता है। गंधार और मथुरा की कलात्मक धाराओं (स्कूल) को भी बौद्ध धर्म ने प्रेरित किया। सभी वर्ग के लोगों के लिए अपने धर्म के दरवाज़े खोलकर बौद्ध धर्म ने ब्राह्मणों की श्रेष्ठता को चुनौती दी और निचले वर्ग के लोगों को समाज में ऊँचा स्थान दिया।

पाठगत प्रश्न 5.2

1. जैन धर्म के सिद्धान्त में 'त्रिरत्न' नाम के कौन से तीन तत्त्व हैं?

2. जैन धर्म की कौन सी दो शाखाएँ हैं?

3. बुद्ध ने अपना पहला प्रवचन किस स्थान पर दिया था?

4. बौद्ध धर्म में कौन से चार महान सत्य और अष्टांग मार्ग हैं?

5. 'दुख' के संबंध में बुद्ध ने क्या शिक्षा दी?

6. बुद्ध ने अपने सिद्धान्तों के प्रचार के लिए किस भाषा का प्रयोग किया?

7. महायान और हीनयान में क्या अन्तर है?

8. साहित्य और कला के क्षेत्र में बौद्ध धर्म ने क्या योगदान किया?

5.3 सोलह महाजन पद

छठी शताब्दी ईसा पूर्व का काल न सिर्फ सामाजिक–आर्थिक और धार्मिक विकास का काल था बल्कि इसमें नए राजनीतिक विकास भी देखने में आए। उत्तर वैदिक काल में, जैसा कि हमने पहले देखा है, लोगों ने खेती–बाड़ी करनी शुरू कर दी थी, जिसकी वजह से उन्हें एक स्थान पर बसना पड़ा। इस स्थायी आवास के फलस्वरूप एक शासक के नियंत्रण के अधीन जनपदों या प्रादेशिक राज्यों की नींव पड़ी। छठीशताब्दी ईसा पूर्व में राजनीतिक गतिविधियों का मुख्य केन्द्र धीरे–धीरे पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में स्थानांतरित हो गया था। अत्यधिक वर्षा के कारण और नदी प्रणालियों की वजह से यह क्षेत्र न सिर्फ उपजाऊ था बल्कि लोहा उत्पाद केन्द्रों के भी

नजदीक था। लोहे से बने बेहतर औज़ारों और शस्त्रों के प्रयोग से कुछ क्षेत्रीय राज्य बहुत विशाल प्रदेश बन गए जिन्हें 'महाजन पद' कहा जाता था। इनमें से ज़्यादातर महाजनपद विंध्य पर्वत श्रंखला के दक्षिण उत्तर में, पूर्व में उप–महाद्वीप के सुदूर उत्तर–पश्चिमी सीमांत से लेकर बिहार तक स्थित थे। इन सोलह महाजनपदों की सूची नीचे दी गई है।

तालिका 5.1 महाजनपद

क्रमसंख्या	महाजनपद	राजधानी	आधुनिक स्थान
1	अंग	चम्पा	मुंगेर और भागलपुर
2	मगध	गिरिव्रज/राजगीर	गया और पटना
3	काशी	काशी	बनारस
4	वत्स	कौशाम्बी	इलाहाबाद
5	कौशल	श्रावस्ती	पूर्वी उत्तर प्रदेश
6	शौरसेना	मथुरा	मथुरा
7	पांचाल	अहिछत्र और काम्पिल्य	पश्चिमी उत्तर प्रदेश
8	कुरू	इन्द्रप्रस्थ	मेरठ और दक्षिण पूर्व हरियाणा
9	मत्स्य	विराटनगर	जयपुर
10.	छेदी	सोठीवाटी/बांदा	बुंदेलखंड
11	अवन्ती	उज्जैन/महिष्मती	मध्य प्रदेश और मालवा
12	गंधार	तक्षशिला	रावलपिंडी
13	कम्बोज	पुंछ	राजौरी और हाजरा (कश्मीर)
14	अस्माका	प्रतिष्ठान/पैठान	गोदावरी के किनारे
15	वज्जी	वैशाली	वैशाली
16	मल्ल	कुशीनारा	देवरिया और उत्तर प्रदेश

इनमें से ज़्यादातर प्रदेश 'राज्यशाही' प्रकति के थे परन्तु कुछ प्रदेश 'गणसंघ' कहलाते थे जहां पर गणतंत्रात्मकृशासन था। इस शासन प्रणाली में राजश्शाही साम्राज्यों, जहाँ वंशगत राजा शासन करता था, से भिन्न तरीके से प्रशासकीय राज चलता था जिसमें एक चुना गया राजा, एक विशाल परिषद या सभाओं की सहायता से राज करता था जिसमें सभी महत्त्वपूर्ण कुलों और परिवारों के मुखिया शामिल होते थे। यह पद्धति राज्य तंत्र से अधिक जनतांत्रिक

आपकी टिप्पणियाँ

थी, यद्यपि आम आदमी की प्रशासन में कोई भूमिका नहीं होती थी। इन सभी प्रदेशों में से सबसे प्रसिद्ध राज्य था 'वज्जी' जिसकी राजधानी थी 'वैशाली' और यहाँ पर लिच्छवियों का शासन था। यह कुलीनतंत्र ज़्यादातर हिमालय पर्वत की तराई के क्षेत्रों में थे। कालांतर में मगध साम्राज्य द्वारा इन्हें हटाकर इन पर विजय प्राप्त कर ली थी।

मानचित्र 5.1 महाजनपद

पाठगत प्रश्न 5.3

1. छठीशताब्दी ईसा पूर्व काल के किन्ही चार 'महाजन पदों' का नाम लिखें।

2. 'गणसंघ' और राज्यश्तंत्र में क्या अंतर था?

3. छठीशताब्दी ई. पू. काल में सबसे महत्त्वपूर्ण गणसंघ कौन सा था?

5.4 मगध का उद्भव

इन महाजनपदों में आपस में संघर्ष के परिणामस्वरूप मगध एक अत्यंत शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरा और एक विशाल साम्राज्य का केन्द्र बन गया। मगध का पहला महत्त्वपूर्णशासक था बिंबिसार जिसने 544 ई. पू. से 492 ई. पू. काल के दौरान 52 वर्षों तकशासन किया। इसने साम्राज्य के विस्तार के लिए तीन पक्षीय नीति अपनाई अर्थात् वैवाहिक संबंध बनाना, शक्तिशाली शासकों से मित्रता करना और कमज़ोर पड़ोसी राज्यों पर विजय प्राप्त करना। वैवाहिक संबंधों की नीति के अधीन बिंबिसार ने कौशल राज्य के राजा प्रसेनजीत की बहन से विवाह किया। वह दहेज में अपने साथ काशी प्रदेश को भी लाई जहां से 1,00,000 सिक्कों का लगान मिलता था। काशी पर नियंत्रण और प्रसेनजीत के साथ मित्रता से मगध को अन्य क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करने का मौका मिला। उसकी अन्य पत्नियाँ क्रमशः लिच्छवियों और मद्र (मध्य पंजाब) के प्रमुखों की बेटियां थीं। इसने अंगदेश के राजा ब्रह्मदत्त को हराकर इस पर विजय प्राप्त की। अंग, विशेष रूप से इसकी राजधानी चम्पा दोनों स्थान स्वदेशी और जलमार्ग से व्यापार करने के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण थे। इस प्रकार काशी और अंग पर विजय पाना मगध साम्राज्य के विस्तार के प्रारंभिक स्थल बने। वे बुद्ध और महावीर, दोनों के समकालीन थे और दोनों को बराबर सम्मान देते थे। विश्वास किया जाता है कि या तो उनकी हत्या की गई थी अथवा उनके पुत्र अजातशत्रु द्वारा उन्हें आत्महत्या करने के लिए मजबूर किया गया होगा क्योंकि वह स्वयं राजगद्दी हथियाने के लिए बहुत उत्सुक था।

अजातशत्रु बहुत ही आक्रामक व्यक्ति था और सबसे पहले उसकी लड़ाई उसके मामा प्रसेनजीत से हुई, जो बिंबिसार के साथ दुर्व्यवहार की वजह से नाराज था। उसने अजातशत्रु से उसकी माँ के दहेज में मिले काशी प्रदेश को वापस लौटाने का आग्रह किया। अजातशत्रु ने इनकार कर दिया और एक घमासान लड़ाई के बाद ही प्रसेनजीत मगध सहित काशी को छोड़ने के लिए सहमत हुआ। इसी प्रकार अजातशत्रु ने वैशाली के शासक अपने नाना चेतक के साथ भी युद्ध किया और 16 वर्ष तक चली लंबी लड़ाई लड़ने के बाद वह वैशाली की ताकत को तोड़ने में कामयाब हो सका और इसके साथ ही उसने काशी को तो अपने पास रखा ही वैशाली को भी मगध में शामिल कर लिया।

अजातशत्रु के उत्तराधिकारी थे उदयन और उसका सबसे बड़ा योगदान था कि उसने गंगा नदी और सोन नदी के संगम स्थल पाटलिपुत्र या पटना में एक किले का निर्माण कराया। युद्ध नीति की दष्टि से एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कदम था क्योंकि यह स्थान न सिर्फ केन्द्र में स्थित था बल्कि यहाँ पर व्यापारियों और सैनिकों का आना–जाना बहुत आसान था।

उदयन के बाद शिशुनाग राजवंश के उत्तराधिकारी बने। शिशुनाग की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी अवन्ती (मालका) को हराकर उसे मगध साम्राज्य का हिस्सा बनाना। शिशुनाग का उत्तराधिकारी बना उसका पुत्र कालअशोक। इसी के शासनकाल में दूसरा बौद्ध धर्म

सम्मेलन आयोजित हुआ था। शिशुनाग राजवंशियों के बाद नंद वंश के राजा उत्तराधिकारी बने। महापद्मनंद इसके प्रमुख शासक थे। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार यह निम्न जाति से या कहें गैर–क्षत्रिय जाति से संबंध रखते थे। इनके पास बहुत बड़ा सैन्यबल था और इन्होंने कलिंग को अपने साम्राज्य में शामिल किया। नंदवंश का अंतिम शासक था घनानंद। ऐसा माना जाता है कि वह बहुत ही लड़ाकू और दमनकारी राजा था और उसने साधारण जनता पर करों का भारी बोझ लाद दिया था। इस वजह से आम जनता में उसकी लोकप्रियता खत्म हो गई और अंत में चन्द्रगुप्त ने जनसाधारण की इस नाराज़गी का फायदा उठाया और उसने नंदवंश के साम्राज्य को उखाड़ फेंका और मौर्य साम्राज्य की नींव रखी।

अब प्रश्न यह है कि मगध उस काल के अन्य सभी प्रदेशों पर धीरे–धीरे अपना वर्चस्व स्थापित कर सकता था। बेशक मगध ने अनेक योग्य और महत्त्वाकांक्षी राजाओं का फायदा उठाया, लेकिन इनकी ताकत मूल रूप से वहाँ की कुछ भौगोलिक विशेषताओं पर आधारित थी। इनकी पुरानी राजधानी गिरिव्रज या राजगीर चारों ओर से पाँच पहाड़ियों से घिरी थी जिन्होंने प्राकतिक किले के रूप में इसकी रक्षा की। दूसरे, इस स्थान की नदी घाटी की उपजाऊ ज़मीन की वज़ह से यहाँ पर अतिरिक्त कषि उत्पाद पैदा होने के कारण ऐसी परिस्थितियाँ बनीं जिनके फलस्वरूप एक बड़ा सैन्य बल खड़ा किया जा सकता था। दक्षिणी क्षेत्रों से इमारती लकड़ी और हाथी मिले। इसके साथ ही मगध को इस स्थान का एक और लाभ मिला कि दक्षिण बिहार के पास मिली लोहे की खानों पर इसका नियंत्रण हो गया। मगध के साम्राज्य की लोहे तक पहुंच ने यहां के अस्त्र–शस्त्र को बहुत ही बेहतर और खेती–बाड़ी के औज़ार की वजह से अधिक उत्पादन के योग्य बना दिया। इसी भौतिक विकास की पष्ठभूमि ने मगध को अन्य महाजनपदों से अधिक शक्तिशाली बनाने में सहायता की।

पाठगत प्रश्न 5.4

1. बिंबिसार ने अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए किन नीतियों को अपनाया?

2. मगध के उत्थान में भौगोलिक तत्त्वों ने कैसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई?

3. मगध की राजधानी का क्या नाम था?

4. दो शासकों के नाम बताएँ जिनके साथ अजातशत्रु ने युद्ध लड़े?

5. नंद राजवंश का सबसे प्रमुख शासक कौन था?

6. किसृशासक के काल में द्वितीय बौद्ध धर्म सम्मेलन का आयोजन हुआ?

5.5 मौर्य साम्राज्य का उदय

मौर्यकालीन स्रोत

321 ई. पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा मौर्य राजवंश की स्थापना को प्राचीन भारत के इतिहास में एक संक्रांतिकाल समझा जाता है। इस समय के दौरान पहली बार अनेक ऐसे स्रोत उपलब्ध हुए जिनसे अब इस काल के इतिहास पर बेहतर ढंग से प्रकाश डाला जा सकता है। अशोक द्वारा जारी किए गए अभिलेख सूचना के बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं और कम से कम 44 ऐसे अभिलेख मिले हैं जो चट्टानों और स्तम्भों पर उत्कीर्ण हैं। ये अभिलेख ज़्यादातर पालि भाषा में हैं और अधिकतर क्षेत्रों में ब्राह्मी लिपि में लिखे गए हैं। ये शिलालेख प्राचीन भारत में लेखन के प्रथम साक्ष्य भी हैं। जहाँ तक पुरातात्विक स्रोतों का संबंध है, पंच–मार्क्ड (ढलाई करके बनाए गए मुद्रित) सिक्के, कुम्हरार में स्थित अशोक महल के अवशेष और मूर्तियों के कुछ टुकड़े बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

सबसे महत्त्वपूर्ण साहित्यिक स्रोत हैं 'कौटिल्य का अर्थशास्त्र' और 'इंडिका ऑफ मैगास्थनीज'। 'अर्थशास्त्र' शासनकला पर लिखा गया ग्रन्थ है, जो राजाओं को यह परामर्श देता है कि अपने राज्य में शासन कैसे किया जाता है और अपने कर्त्तव्यों का पालन किस प्रकार किया जाता है। इंडिका, सैल्यूकस द्वारा भेजे गए यूनानी, मैगास्थनीज का यात्रा वत्तांत है जिसे चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में राजदूत के रूप में भेजा गया था। 'दीपवंश' और 'महावंश' दो श्रीलंकाई बौद्ध ग्रंथ हैं और विशाखादत्त द्वारा रचित नाटक 'मुद्राराक्षस' भी एक अन्य अमूल्य ग्रंथ हैं।

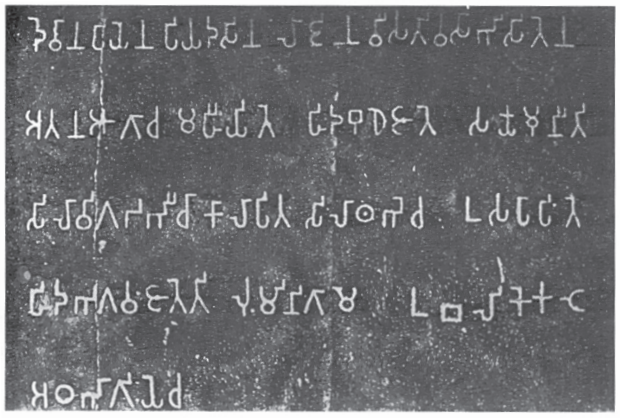

चित्र 5.1 रूम्मनदेई के शिलालेख

मौर्यकालीन राजवंश

मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य (321-297 ई. पू.) को नंद की बहुत विशाल सेना विरासत में मिली, जिसका उपयोग उसने लगभग सम्पूर्ण उत्तर भारत, उत्तर पश्चिम और भारत के काफी बड़े भाग को जीतने के लिए किया। उसका पुत्र बिन्दुसार (297-269 ई. पू. में) उसका उत्तराधिकारी बना। इसने यूनान के लोगों के साथ परस्पर व्यापार और सांस्कतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा दिया, परन्तु इस संबंध में बहुत ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है। अशोक 269-232 ई. पू. में अपने पिता बिन्दुसार का

उत्तराधिकारी बना। बौद्ध परम्पराओं के अनुसार ऐसा कहा जाता है कि अशोक ने अपने 99 भाइयों की हत्या करके सिंहासन हासिल किया था परन्तु किसी अन्य स्रोत से इस तथ्य की पुष्टि न हो पाने के कारण इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। अशोक ने 261 ई. पू. के आसपास कलिंग के साथ एक बहुत बड़ा घमासान युद्ध किया जिसमें बहुत बड़ी संख्या में लोग मारे गये थे अथवा उन्हें बंदी बना लिया गया था। शायद इस रक्तपात ने उसके हृदय को करुणा से भर दिया और उसने सैनिक बल के आधार पर राज्य विस्तार की नीति को छोड़ने का निर्णय किया और घोषित किया कि भविष्य में वह 'भरीघोष' (युद्ध का नगाड़ा) से 'धम्मघोष' (धम्म के नगाड़े) को बेहतर समझेगा। अपना संपूर्ण शेष जीवन उसने 'धम्म' के सिद्धान्तों के प्रचार और प्रसार में व्यतीत किया। परन्तु उसका उत्तराधिकारी उसके साम्राज्य को संगठित रखने में असफल रहा और 187 ई. पू. के आसपास इनके अंतिम शासक राजा बहदरथ की उसके सेनापति पुष्यमित्र सुंग ने हत्या कर दी और फिर यह साम्राज्य पूरी तरह समाप्त हो गया।

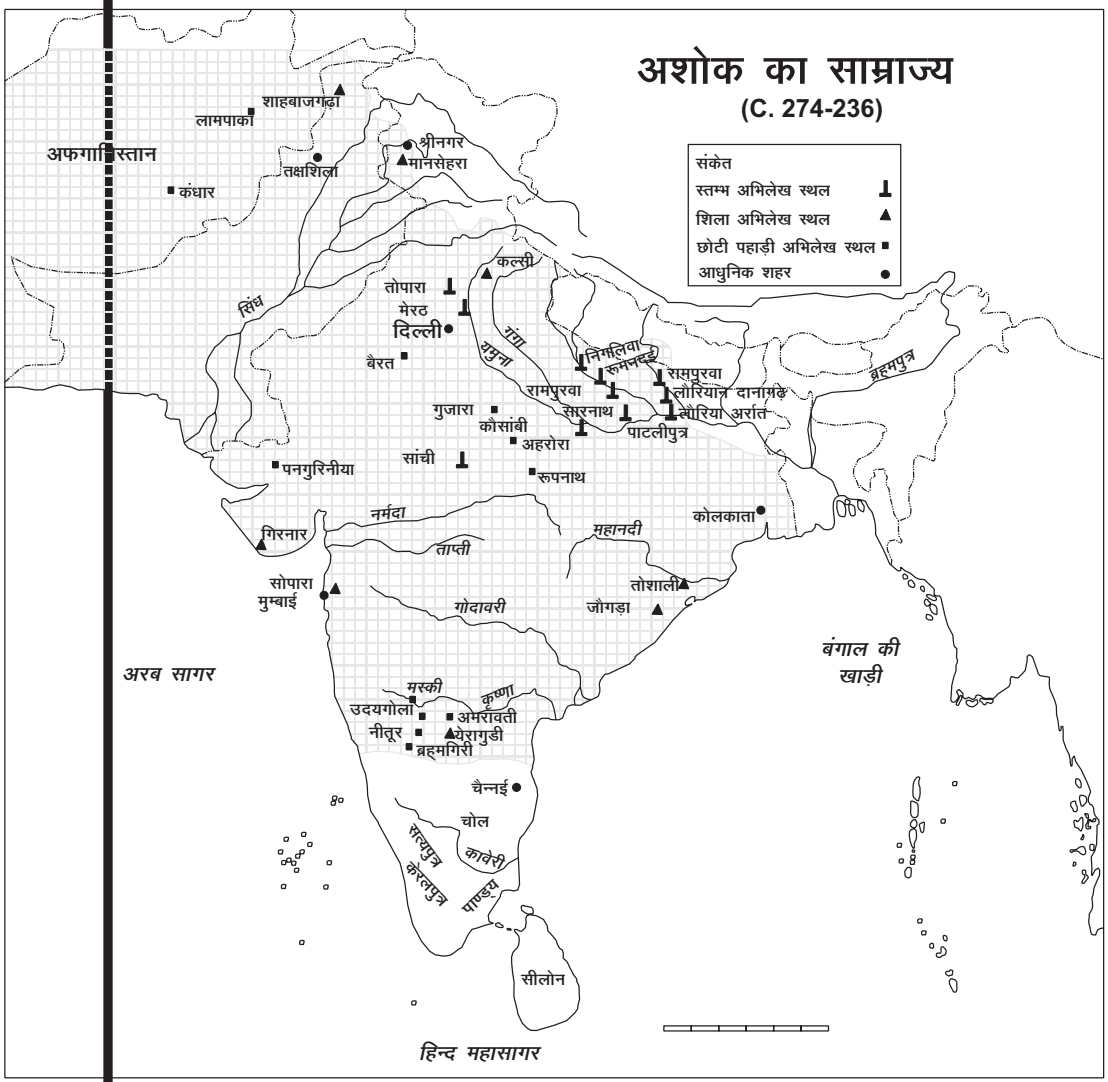

मानचित्र 5.2 अशोक का साम्राज्य

पाठगत प्रश्न 5.5

1. मौर्यकालीन इतिहास लिखने के लिए कौन–कौन से मुख्य स्त्रोत हैं?

2. अशोक के अधिकांश शिलालेख किस भाषा और लिपि में लिखे गए हैं?

3. इंडिका का लेखक कौन है?

4. अंतिम मौर्य शासक कौन था?

5.6 अशोक और उसका धम्म

अशोक को भारतीय इतिहास में एक महानतम शासक माना जाता है। उसकी प्रशंसा उसकी सैनिक गतिविधियों की तुलना में उसकी 'धम्म' से संबंधित नीतियों के लिए की जाती है। कुछ विद्वानों के मतानुसार अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था और उसने धम्म के ज़रिये बौद्ध धर्म के सिद्धांतों के प्रचार का प्रयास किया। परन्तु इसमें कोई सच्चाई दिखाई नहीं देती, क्योंकि धम्म का बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार से कुछ लेना–देना नहीं था। यह तो एक आचार–संहिता या आदर्श सामाजिक व्यवहार था, जो विश्व के सभी धर्मों में सामान्य रूप से मिलता है, और जिसको अपनाने के लिए उसने अपनी प्रजा से अनुरोध किया। यद्यपि स्वयं अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था, परन्तु उसने कभी भी किन्हीं अन्य मतों या धर्मों के विरुद्ध कोई भेदभाव नहीं किया।

अशोक कालीन शिलालेखों के गहन अध्ययन से पता चलता है कि धम्म की मूल विशेषताओं में शामिल थी करूणा (दया), दान–दक्षिणा (दान), सच्चाई, पवित्रता और अच्छा व्यवहार। स्तम्भों के शिलालेख–3 में लोगों से हिंसा पर नियंत्रण, अत्याचार, क्रोध और ईर्ष्या पर नियंत्रण पाने का अनुरोध किया गया है। चट्टानों पर खुदे शिलालेख–1 में लोगों को पशु वध पर पाबंदी और 'समाज' की तरह के सामाजिक सम्मेलनों पर रोक लगाई गई है। चट्टानों के शिलालेख–2 पर यह घोषित किया गया है कि अस्पताल, सड़कें, सरायों और कुओं के निर्माण और छायादार पेड़ लगाने के उपाय किए जाएं। चट्टानों पर खुदे तीसरे, चौथे और बारहवें अभिलेखों में लोगों से कहा गया है कि वे माता–पिता, संबंधियों, ब्राह्मणों और श्रमणों (भिक्षुओं) का सम्मान करें। उसने अपने राज्य में 'धम्म महाभाग' नामक विशिष्ट प्रकार के काम करने वालों को भी नियुक्त किया। उनका मुख्य काम था इसका निरीक्षण धम्म के सिद्धांतों का शांतिपूर्ण रूप से पालन हो रहा हैं। 12वें शिलालेख का अभिलेख विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें कहा गया है कि 'राजा प्रियदर्शी, ईश्वर का प्रिय है, सभी सम्प्रदायों का सम्मान करता है। चाहे वे सन्यासी हैं या गहस्थ और उन्हें विविध प्रकार के उपहार और सम्मान देकर उनका आदर करता हैं और

चाहे वह किसी अन्य धर्म का अनुयायी हो, हर अवसर पर उसका भी सम्मान होना चाहिए। अशोक लोगों को बौद्ध धर्म का अनुयायी बनाने का प्रयास कर रहा था, परन्तु सोचने की बात है कि उसने इस नीति पर अत्यधिक बल क्यों दिया?

इतिहासकार यह मानते हैं कि अशोक के शासन का आधा समय बीतते–बीतते, साम्राज्य का विस्तार लगभग पूरा हो चुका था। यह ऐसा साम्राज्य था, जिसमें भिन्न–भिन्न सांस्कतिक, सामाजिक और धार्मिक समूह थे। इन मतभेदों (फूट) से पैदा हुए राजनीतिक तनाव से साम्राज्य को बचाने के लिए उसके हित में दो रास्ते हो सकते थे। एक तो यह कि वह इन संघर्षों के समाधान के लिए अपने सैनिक बल में वद्धि करता, जिसके लिए

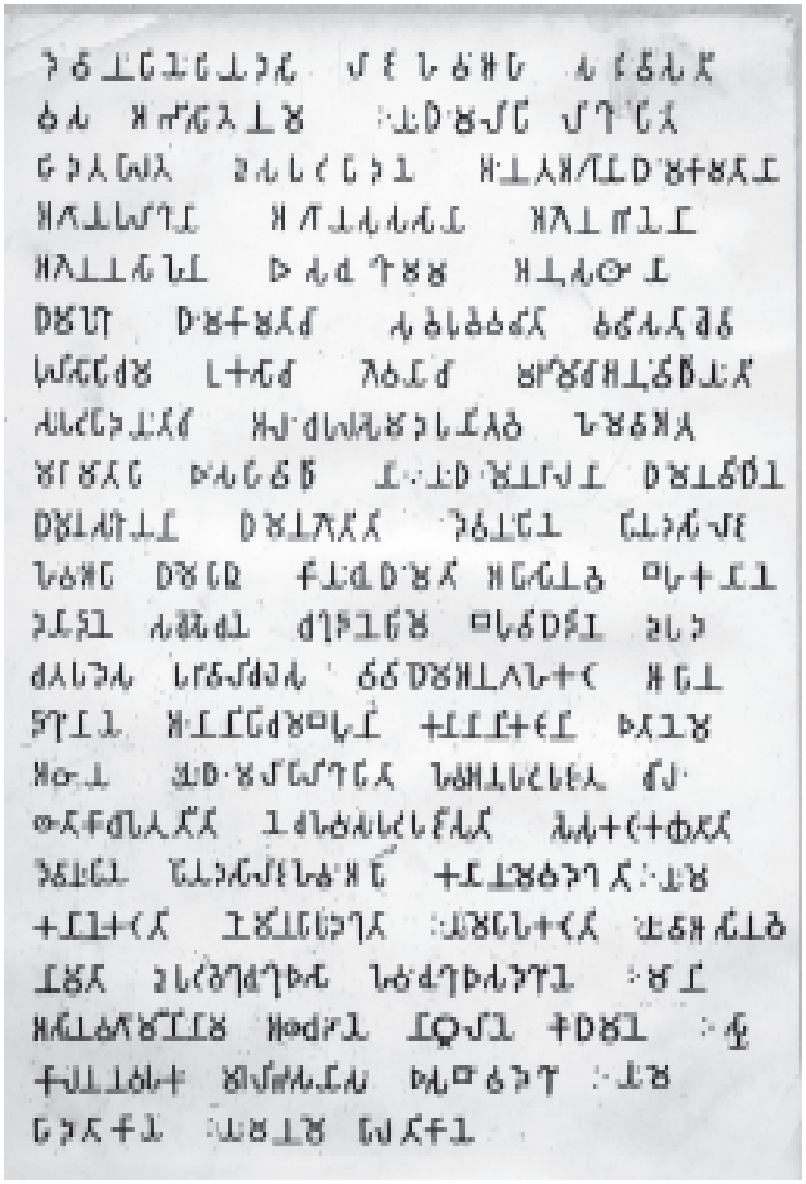

चित्र 5.2 अशोक स्तम्भ का अभिलेख

संभवतः उसे करों में और वद्धि करनी पड़ती और इससे उसे और अधिक लोगों के विरोध का सामना करना पड़ता। दूसरा विकल्प था कि विभिन्न मतभेदों वाले समूहों में परस्पर सद्भाव और सहृदयता उत्पन्न करके एकता पैदा की जाए, जिससे उनकी आपसी लड़ाई खत्म करने का शांतिपूर्ण समाधान खोजा जाए। अशोक ने अपने साम्राज्य में सामंजस्य और शांति स्थापना के लिए दूसरे विकल्प का चुनाव किया। अतः भारतीय इतिहास में अशोक का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि वह पहला ऐसा शासक था, जिसने युद्ध और आक्रमण के स्थान पर शांति की नीतियों की शुरुआत की।

पाठगत प्रश्न 5.6

1. 'धम्म' के संबंध में अशोककालीन शिलालेख हमें क्या बताते हैं?

2. अन्य धर्मों के साथ अशोक का कैसा व्यवहार था?

3. धम्ममहामात्रों के क्या कार्य थे?

5.7 मौर्यों का पतन

मौर्यों के पास एक विशाल सेना और एक बड़ा शासन तंत्र था और उन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप के एक बहुत बड़े भू–भाग पर शासन किया। परन्तु अशोक की मत्यु के पश्चात शीघ्र ही साम्राज्य दो भागों मे विभाजित हो गया। पूर्वी भाग के साम्राज्य का नियंत्रण राजा दशरथ के हाथों में और पश्चिमी भाग सम्प्रति के अधीन था। इतने बड़े साम्राज्य का पतन इतनी जल्दी कैसे हुआ?

कुछ इतिहासकार यह मानते हैं कि बौद्ध धर्म के प्रभाव में आने के बाद अशोक शांतिप्रिय बन गया था और उसने अपनी सेना को दुर्बल बना दिया था। यह भी कहा जाता है कि अशोक की धार्मिक नीति ने ब्राह्मणों को उसका विरोधी बना दिया था, क्योंकि अशोक ने पशु–बलि पर रोक लगा दी थी, जिसके परिणामस्वरूप ब्राह्मणों की आर्थिक स्थिति और धार्मिक कार्यकलापों पर बुरा प्रभाव पड़ा था। इसीलिए, पुष्यमित्र जो ब्राह्मण सेनापति था, ने अंतिम मौर्य शासक की हत्या कर दी थी। परन्तु इसको सही नहीं माना जा सकता, क्योंकि अशोक कालीन शिलालेखों से पता चलता है कि अशोक ब्राह्मणों को पूरा सम्मान देता था। इसके अतिरिक्त यह सच है कि अशोक ने शांति और सामंजस्य की नीति को अपनाया, परन्तु अपने सैन्य बल को समाप्त नहीं किया था और किसी भी आक्रमण के मुकाबले के लिए हमेशा तत्पर रहा।

पतन का एक मुख्य कारण शायद यह हो सकता है कि मौर्य वंश का शासन दुर्बल उत्तराधिकारी राजाओं को मिल गया था। ये शासक दूर–दराज क्षेत्रों के उन अधिकारियों पर अपना नियंत्रण नहीं रख पाए जो अत्याचारी बन चुके थे और केंद्र के हितों के विरुद्ध काम कर रहे थे। यह भी संभव है कि मौर्य साम्राज्य को किसी प्रकार

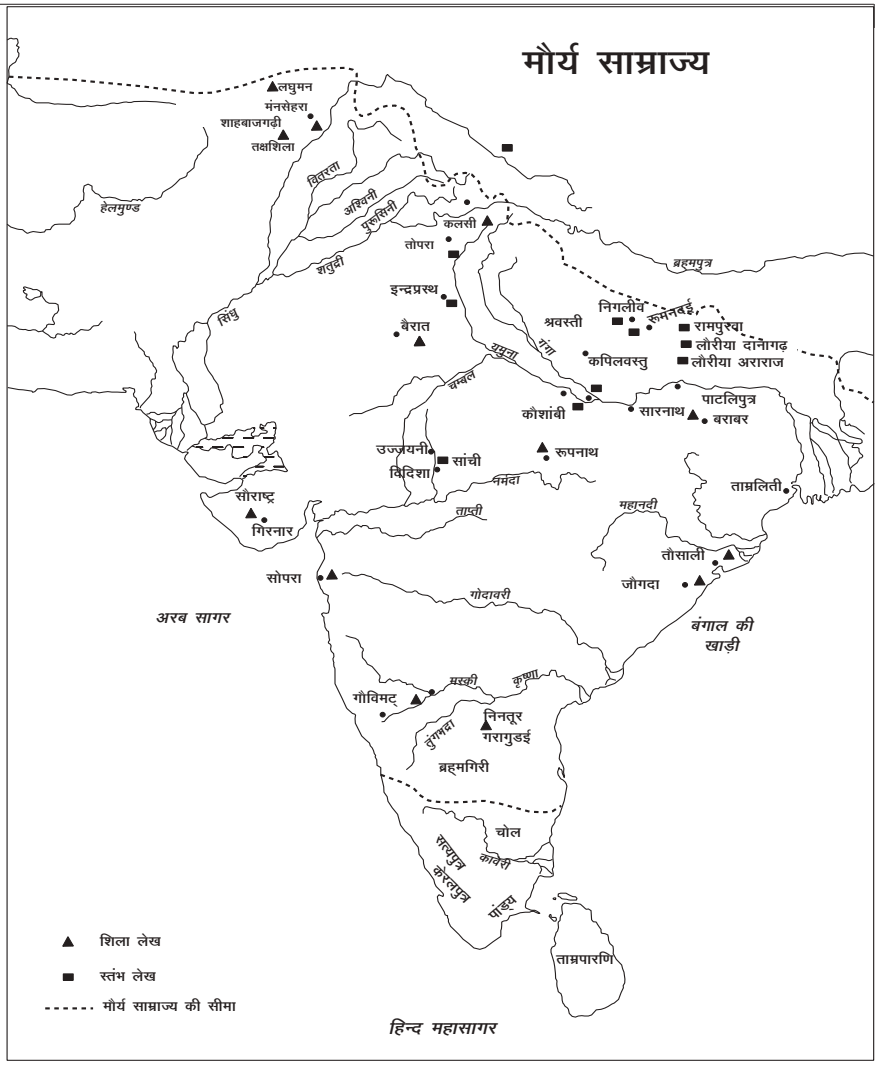

मानचित्र 5.3 मौर्य साम्राज्य

के आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा होगा। उस काल के कुछ सिक्कों के मूल्य कम होने से इस बात का पता चलता है। यह संकट शायद अत्यधिक दान–दक्षिणा अथवा साम्राज्यिक प्रशासनिक प्रणाली पर अत्यधिक खर्च किए जाने से भी आने की संभावना हो सकती है। असल में, पतन का कारण था इतने विस्तत साम्राज्य के केंद्रीय ढांचे का वंश के आधार पर चला आने वाला रूप। अशोक के उत्तराधिकारी साम्राज्य के केंद्रीय और विभिन्न प्रदेश के राज्यों, सूबेदारों के बीच परस्पर संतुलन बनाए रखने में असफल रहे और पहला संभावित मौका मिलते ही उन्होंने खुद को केंद्र से पथक करने का प्रयास किया। फिर भी हम कह सकते हैं कि यद्यपि मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया, परन्तु इस उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में कषि और लौह तकनीकी के प्रसार में इसका बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा। इसके परिणामस्वरूप मौर्य साम्राज्य के उपरान्त, अनेक क्षेत्रीय राज्यों को पनपने का अवसर मिला।

पाठगत प्रश्न 5.7

1. मौर्य साम्राज्य के पतन के मुख्य कारणों पर प्रकाश डालें?

2. अशोक की मत्यु के उपरांत किन दो शासकों ने दो भागों पर राज किया?

3. मौर्यकालीन शासन का, आगे चलकर भारतीय इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा?

5.8 मौर्य शासन के अधीन भारत

मौर्यों ने प्रशासन की बहुत ही बेहतर पद्धति स्थापित की, जिसमें राजा की मुख्य भूमिका थी। एक मंत्री परिषद उसकी सहायता करती थी, परन्तु प्रशासन से संबंधित सभी मामले जैसे लगान, कानून और व्यवस्था, युद्ध अथवा किसी भी संबंधित विषय में अंतिम निर्णय स्वयं राजा लेता था। उससे आशा की जाती थी कि वह बहुत कुशल हो और हर समय उसके प्रशासन अधिकारियों की पहुंच उस तक बनी रहे। अपने शिलालेखों के एक अभिलेख में उनके द्वारा यह घोषणा की गई है कि सामान्य जनता का कोई भी व्यक्ति किसी भी समय उससे मिल सकता है। उसने यह भी घोषित किया था कि उसकी संपूर्ण प्रजा उसकी संतान के समान है और वह उन सभी की सुख–समद्धि की कामना रखता है न सिर्फ इस संसार में बल्कि मत्यु के उपरान्त दूसरे लोक में भी।

राजा ने मंत्रियों की एक परिषद बनाई थी, जिसे मंत्री परिषद कहते थे और अन्य अनेक अधिकारी थे, जो उसे अपने कर्त्तव्य को निभाने में उसकी सहायता करते थे। इन अधिकारियों को अमात्य, महामात्र और अध्यक्ष कहकर बुलाते थे। अर्थशास्त्र में 27 ऐसे अध्यक्षों अथवा अधीक्षकों की सूची दी गई है, जिनका दायित्व था विभिन्न आर्थिक विभागों जैसे कषि, खनन (खानें), बुनकर और व्यापारिक विभागों के संचालन की देख–रेख करें। इन सभी कार्यकारी कर्मचारियों में से समाहर्त्ता का पद सबसे महत्वपूर्ण था। इसकी ज़िम्मेदारी थी, सभी प्रकार के स्रोतों से किए जाने वाले कर संग्रह की निगरानी करना। ऊपर उल्लिखित अधिकांश अधीक्षक उसके आदेशों पर कार्य करते थे। मौर्यों ने बहुत बड़ी संख्या मे सैनिकों को भी नियुक्त किया था।

मौर्यों के पास एक बहुत विशाल सेना थी और यूनानी लेखक जस्टिन के अनुसार चंद्रगुप्त की सेना में 6,00,000 पैदल सैनिक, 30,000 घुड़सवार, 9,000 हाथी और 8,000 रथ थे। यद्यपि ऐसा लगता है कि यह संख्या बहुत बढ़ा–चढ़ाकर लिखी गई है, परन्तु मौर्यों के पास एक विशाल सेना थी, इसमें कोई संदेह नहीं हैं। मैगास्थनीज ने लिखा है कि सेना की विभिन्न शाखाओं की प्रशासनिक कार्यों की पूर्ति प्रत्येक में पाँच सदस्यों की सदस्यता से गठित पाँच समितियों द्वारा की जाती थी। किलों की सीमाओं की सुरक्षा का दायित्व जिसे दिया गया था, उसे 'अन्तःपाल' कहते थे।

जहाँ तक न्यायिक प्रशासन का संबंध है, राजा सर्वोच्च प्राधिकारी था, परन्तु गाँवों और प्रदेशों के स्तर पर अनेक दीवानी और आपराधिक अदालतें काम करती थीं। ऐसा लगता है कि शायद अधिकांश मामलों का निपटारा गाँव के बुजुर्गों के स्तर पर ही हो जाता था।

आपकी टिप्पणियाँ

मगध की राजधानी पाटलीपुत्र के अतिरिक्त संपूर्ण मौर्य साम्राज्य को चार अन्य प्रदेशों में बांटा गया था, जिनकी राजधानियां थीं तक्षशिला (उत्तर–पश्चिमी भारत), सुवर्णगिरी (दक्षिण भारत), तोसाली (पूर्वी भारत) और उज्जैन (पश्चिमी भारत)। इनका नियंत्रण शाही राजकुमारों के नियंत्रण में रखा गया था, जिन्हें 'कुमार' कहते थे। मेगास्थनीज के अनुसार, पाटलीपुत्र नगर के प्रशासन का संचालन पाँच–पाँच सदस्यों की छह समितियां करती थीं। प्रत्येक समिति को अलग–अलग विषयों का काम सौंपा गया था। जैसे उद्योग, विदेशी, जन्म और मत्यु पंजीकरण, व्यापार और बाज़ार की संचालन व्यवस्था और कर संग्रहण। फिर भी यह स्पष्ट संकेत नहीं मिलता कि संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में इसी प्रकार का नगर प्रशासन चलता था या नहीं। ऐसा लगता है कि केंद्रीय प्रांत मगध का प्रशासन सीधे राजा की कड़ी निगरानी के अधीन संचालित होता था और अन्य दूर–दराज के क्षेत्रों पर अलग–अलग स्तर का प्रशासनिक नियंत्रण होता था।

अर्थव्यवस्था, समाज और कला

जैसा कि ऊपर बताया गया हैं, मौर्यों के पास बड़ी स्थायी सेना थी और बहुत बड़ी संख्या में सरकारी अधिकारियों की व्यवस्था की गई थी। इन सैनिकों और कर्मचारियों को नकद भुगतान किया जाता था, क्योंकि राज्य की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सामान्य करों को पर्याप्त नहीं समझा जाता था, इसलिए ज्यादा से ज्यादा संसाधन पैदा करने के लिए अनेक प्रकार की आर्थिक गतिविधियाँ चलाई जाती थीं।

इस काल में अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था कषि। मौर्य शासकों ने परती (खाली) भूमि को खेती–बाड़ी के उपयोग में लाने के लिए नए कषि आधारित स्थलों का निर्माण कराया। खेतों में काम करने के लिए अत्यधिक जनसंख्या वाले क्षेत्रों से लोगों और युद्ध बंदियों को यहाँ लाकर बसाया गया। इन गाँवों का स्वामित्व राजा के पास था और जो भी कर्मचारी इनकी देखभाल करते थे उन्हें 'सीताध्यक्ष' अथवा 'कषि अधीक्षक' कहते थे। शासकीय कषि–क्षेत्रों (धर्मों) के अतिरिक्त निजी भू–स्वामी भी थे, जो राज्य को अनेक प्रकार के कर देते थे। सिंचाई के महत्व को सभी भली–भाँति जानते थे और सिंचित भूमि के लिए किसानों को अधिक कर देना पड़ता था। 'बलि' या 'भूमि–कर' लगान का मुख्य अंग था, जो कुल उत्पादन के छठे भाग के बराबर मात्रा की दर से देना होता था। किसानों को और भी अनेक करों का भुगतान करना पड़ता था जैसे 'पिंडकर' हिरण्य, भाग और भोग इत्यादि। इनकी सही प्रकति के संबंध में विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। प्रमुख फ़सलों में विविध प्रकार की चीजें थीं, जैसे अनेक किस्म के चावल, जौ, जई, बाजरा, गेहूं, गन्ना और अनेक प्रकार की दालें, मटर, तिलहन (तेल देने वाली फ़सलें) जिन्हें हम आज इन्हीं रूपों में पहचानते हैं।

मौर्य शासन काल में व्यापार और अर्थव्यवस्था को बहुत बढ़ावा मिला और इसने साम्राज्य के लगभग सभी भागों पर अपना प्रभाव छोड़ा। वस्त्र उत्पादन के मुख्य केन्द्र थे वाराणसी, मथुरा, बंगाल, गंधार और उज्जैन। खनन और धातु–कर्म एक अन्य महत्त्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि थी। व्यापार का संचालन भू–मार्गों और जलमार्ग दो तरह से होता था। पाटलीपुत्र, अनेक व्यापारिक मार्गों के जरिये इस उपमहाद्वीप के सभी भागों से जुड़ा हुआ था। उत्तर पश्चिम में सबसे बड़ा व्यापारिक केन्द्र था तक्षशिला, जो आगे मध्य एशिया के बाज़ारों से जुड़ा हुआ था। पूर्व में ताम्रलिप्ति (पश्चिम बंगाल में तामलुक) और पश्चिम में भड़ौच बहुत महत्त्वपूर्ण बंदरगाह थे।

शिल्प कार्य भी शासन की आय के बहुत बड़े स्रोत थे। शहरों में रहने वाले कारीगरों को नगद राशि या अन्य किसी चीज़ से या राजा के लिए निःशुल्क कार्य करके कर चुकाना पड़ता था। व्यापारियों और कारीगरों को संगठनों के रूप में व्यवस्थित किया जाता था जिन्हें 'श्रेणियां', या 'गिल्ड' कहा जाता था। इस उपमहाद्वीप में बड़े पैमाने पर लोहे का प्रयोग शुरू करने का श्रेय मौर्यों को जाता है। लोहे के उत्पादन पर मौर्यों का एकछत्र अधिकार था

चित्र 5.3 सारनाथ स्तम्भ

चित्र 5.4 बारबरा की पहाड़ियों में बनी गुफा

चित्र 5.5 दीदारगंज यक्षिणी

क्योंकि सेना, व्यापार और खेती–बाड़ी के क्षेत्रों में लोहे की अत्यधिक मांग रहती थी। यह सारा कारोबार लौह अध्यक्ष नामक शाही कर्मचारी की निगरानी में होता था।

जहाँ तक समाज का संबंध है, बौद्ध धर्म और जैन धर्म द्वारा चुनौती दिए जाने के बावजूद वर्ण व्यवस्था अभी भी मौजूद थी और सामाजिक श्रेणी क्रम में ब्राह्मण और क्षत्रिय अभी भी सर्वोच्च स्थान पर थे। परन्तु अधिकाधिक व्यापार और वाणिज्य के परिणामस्वरूप वैश्यों या व्यापार करने वाली जातियों और शूद्रों के सामाजिक स्तर में भी सुधार हुआ था। शूद्रों को अब कषि और शिल्पकलाओं के कामों में शामिल किया जा सकता था। इस काल में अछूतों की संख्या में भी काफी वद्धि देखने में आई।

मौर्यकाल ने प्राचीन भारतीय कला और वास्तुशिल्प के प्राचीनतम नमूने भारत को उपलब्ध कराए हैं। मैगस्थनीज़ ने पाटलीपुत्र में बने महल की भव्यता का विस्तत विवरण किया है। पटना के पास कुम्हरार में इस महल के कुछ अवशेष मिले हैं। इस काल में विकसित हुई पत्थर की मूर्तियां बनाने की कला के बहुत ही श्रेष्ठ नमूने रामपुरवा, लौरीया, नंदनगढ़ और सारनाथ के अशोक स्तम्भों के रूप में प्राप्त हुए हैं। हमारा राष्ट्रीय चिह्न भी बनारस के पास स्थित सारनाथ के अशोक स्तम्भ से लिया गया है। ये सभी स्तम्भ गोलाकार और एक ही पत्थर को तराश कर बनाए गए हैं और रेतीले पत्थर से बने हैं और उत्तर प्रदेश में मिरज़ापुर के नज़दीक चुनार नामक स्थान पर मिले हैं। मौर्यकाल से संबद्ध कुछ चट्टानों में कटाई करके बनाए गए वास्तु शिल्प के नमूने, जैसे गया के पास बारबरा पहाड़ियों में बनी लोमस ऋषि गुफा, भी हमें मिले हैं। इस काल से संबंधित अनेक पत्थर और मिट्टी के बने मूर्ति शिल्प के नमूने, पॉलिश किए गए। पत्थरों की बनी दीदारगंज यक्षिणी के रूप में जानी जाने वाली एक पत्थर की नारी–मूर्ति, जो हाथ में चौरी रखे हुए है, बहुत ही प्रसिद्ध नमूना है।

पाठगत प्रश्न 5.8

1. करों के मूल्यांकन और संग्रहण के लिए मौर्य काल का कौन–सा अधिकारी ज़िम्मेदार था?

   _____

2. शाही मालिकाना की भूमि पर होने वाली खेती किस अधिकारी की निगरानी में होती थी?

   _____

3. गया के पास बारबरा पहाड़ियों में चट्टान काट कर बनाई गई गुफा का क्या नाम है?

   _____

आपने क्या सीखा

लोहे के औज़ारों और मध्य गंगा के मैदानों में पशु धन के उपयोग के परिणामस्वरूप छठी शताब्दी ईसा पूर्व काल में कषि उत्पादों और खाद्य आपूर्ति में बहुत वद्धि हुई। कषि के इस विकास से शहरों, व्यापार और धन संबंधी अर्थिक नीति में बहुत विकास हुआ। इसीलिए छठी शताब्दी ईसा पूर्व अवधि को 'द्वितीय नगरीकरण' का काल कहा जाता है। इस काल में गैर–वैदिक धर्म जैसे बौद्ध धर्म और जैन धर्म ने नवीन सामाजिक वास्तविकताओं का प्रत्युत्तर

दिया और यह तर्क दिया कि पशुबलि, महाजनी (धन उधार देना) और शहरी जीवन पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। उन्होंने व्यापारिक सम्प्रदायों को उच्च सामाजिक स्तर दिए जाने का पक्ष लिया और इसके बदले में उन लोगों ने इन नए धर्मों को संरक्षण दिया। जैन धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ हैं 'त्रिरत्न' और 'पंचमहाव्रत', जबकि गौतम बुद्ध ने लोगों को 'चार महान सत्यों' को अपनाने और अष्टमार्ग पर चलने की शिक्षा दी। पूर्व काल के जनपदों को संगठित किया गया, जिसके परिणामस्वरूप सोलह महाजनपदों का उद्‌भव हुआ। कुछ जनपदों में राजतंत्रीय शासकीय व्यवस्था लागू थी। अन्त में मगध के महत्त्वाकांक्षी शासकों द्वारा अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों का उपयोग करने के कारण एक विशाल साम्राज्य का उद्‌भव हुआ। बाद में मौर्यों ने नंद राजवंश को उखाड़ फेंका और अपना साम्राज्य स्थापित किया। उनके पास एक उच्च कोटि का व्यवस्थित अधिकारी–तंत्र (नौकरशाही) था जिसमें एक विशाल सैनिक बल शामिल था और उन्होंने इस उपमहाद्वीप के बहुत बड़े भू–भाग पर शासन किया। भारत के महानतम शासकों में से शासक अशोक ने 'धम्म' के सिद्धांतों को अपनाया, जिसका उद्‌देश्य था साम्राज्य का संगठन और आंतरिक मतभेदों को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाया जाए। अशोक की मत्यु के उपरान्त मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया, जिसका कारण था उसके बाद के शासकों की अयोग्यता और साम्राज्य के केंद्र और सीमांत के प्रदेशों में संबंधों में अस्थिरता का पनपना।

पाठांत प्रश्न

1. वैश्यों ने बौद्ध धर्म और जैन धर्म का संरक्षण क्यों किया?
2. जैन और बौद्ध धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ क्या हैं?
3. अशोक की धम्म–नीति की मुख्य विशेषताएं क्या हैं?
4. अशोक ने धम्म की नीति का अनुपालन क्यों किया?
5. अत्यधिक कर एकत्रित करने के लिए मौर्यों ने कौन–कौन से प्रयास किए?
6. कला के क्षेत्र में मौर्यों के योगदान का विस्तत विवरण दें?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1. जखेड़ा, राजघाट, कौशाम्बी, वैशाली और सोनपुर
2. देखें अनुच्छेद 5.1 – 3
3. देखें अनुच्छेद 5.1 – 4
4. मखाली घोषाल

5.2

1. उचित विश्वास, उचित ज्ञान और उचित व्यवहार

2. दिगम्बर और श्वेताम्बर
3. सारनाथ
4. देखें अनुच्छेद 5.2 – 4
5. देखें अनुच्छेद 5.2 – 4
6. पालि
7. देखें अनुच्छेद 5.2 – 7
8. देखें अनुच्छेद 5.2 – 8

5.3

1. देखें अनुच्छेद 5.3 (तालिका 5.1)
2. देखें 5.3, अनुच्छेद 2
3. वैशाली

5.4

1. देखें अनुच्छेद 5.4 – 1
2. देखें अनुच्छेद 5.2 – 6
3. गिरिव्रज या राजगीर
4. प्रसेनजित और चेतक
5. महापद्मानंद
6. कालाशोक

5.5

1. देखें अनुच्छेद 5.5 – 1
2. प्राकत और ब्राह्मी
3. मैगस्थनीज़
4. बहद्रथ

5.6

1. देखें अनुच्छेद 1
2. देखें अनुच्छेद 2
3. ब्राहमणों और अन्य सभी प्रकार के भिक्षुओं की देखभाल

5.7

1. देखें अनुच्छेद 5.7

2. दशरथ और सम्प्रति
3. इससे लौह–तकनीकी और कषि का विस्तार हुआ, जिससे भारत में अनेक क्षेत्रीय राज्यों का उद्‌भव हुआ।

5.8

1. समाहर्त्ता
2. सीताध्यक्ष
3. गया के पास लोमासा ऋषि गुफा

पाठांत प्रश्नों के संकेत

1. देखें अनुच्छेद 5.1 – 5
2. देखें अनुच्छेद 5.2 – 1 और 4
3. देखें अनुच्छेद 5.6 – 1
4. शिलालेख। देखें अनुच्छेद 5.6 – 2
5. देखें अनुच्छेद 5.8 – 2 और 3 (अर्थव्यवस्था, समाज और कला)
6. देखें अनुच्छेद 5.8

शब्दावली

जातक - बुद्ध के पिछले जन्मों से संबद्ध बौद्ध कहानियों का संग्रह
तीर्थंकर - जैन धर्म में तीर्थकर की परंपरा; शाब्दिक अर्थ 'मोक्षदाता'
निर्वाण - मानव इच्छाओं से मुक्ति।
दिगम्बर - 'निर्वस्त्र', जैन धर्म की एक शाखा (सम्प्रदाय) जिसमें नग्न रहते हैं।
श्वेतांबर - जैन धर्म की एक शाखा (सम्प्रदाय) जिसके अनुयायी सफेद वस्त्र पहनते हैं।
महायान - बौद्ध धर्म की एक शाखा जिसमें बुद्ध की प्रतिमा की पूजा की जाती है।
हीनयान - बौद्ध धर्म की एक शाखा जिसमें बुद्ध की मूल शिक्षाओं को अपनाने पर बल दिया।
समाज - धार्मिक और आनंदित लोगो की सभा
धम्म महाआमात्य - अशोक द्वारा नियुक्त अधिकारी जिसका काम था समाज में धम्म के सिद्धांतों के अनुपालन पर निगरानी रखना।
चौरी - बालों से बना एक पंखा (चंवर) जिसे किसी राजा या धार्मिक वस्तु के ऊपर आगे–पीछे डुलाया जाता है।